साहित्य अकादेमी
महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI
FELLOWSHIP

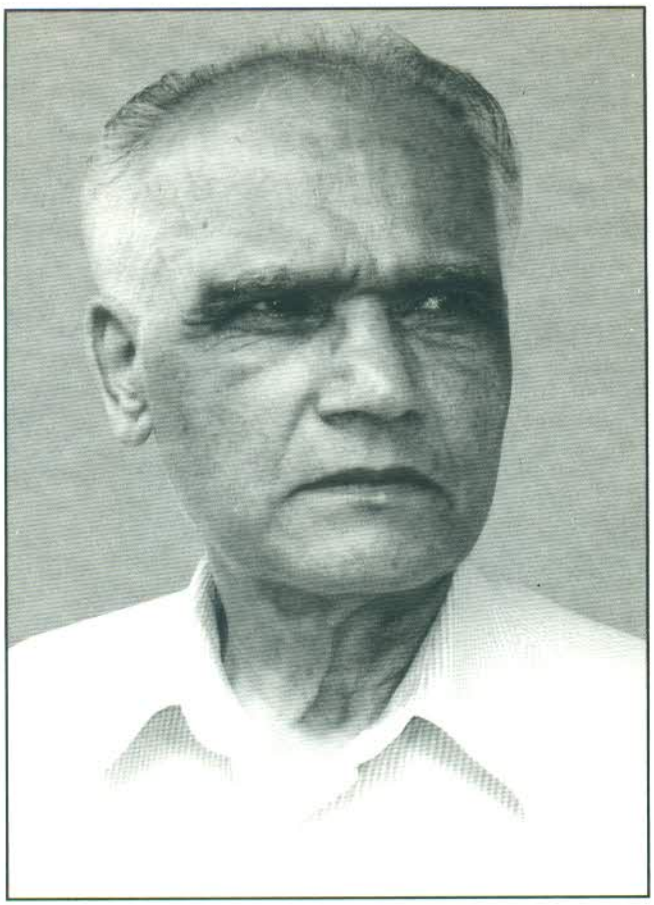

एस.एल. भैरप्पा
S.L. BHYRAPPA

5 July 2015, Bengaluru

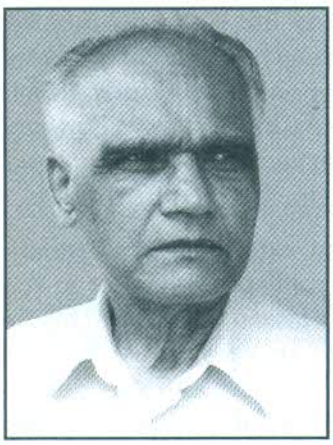

एस.एल. भैरप्पा

S.L. BHYRAPPA

जीवित किंवदंती बन चुके साहित्यकार

एस.एल. भैरप्पा, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता अर्पित कर रही है, प्रख्यात कन्नड रचनाकार हैं जिन्होंने पाँच दशकों के अपने रचनाकाल में 20 से अधिक उपन्यासों की रचना की है।

किसी जीवित किंवदंती का परिचय भला कैसे दिया जा सकता है? वह भी महामानव की भाँति जिसने तेईस उपन्यासों और आश्चर्यजनक ईमानदारी से लिखी आत्मकथा जैसी रचनाओं के साथ आधी सदी तक साहित्यिक भू क्षेत्र में अपने लंबे-लंबे डगों से चहलक़दमी की हो? सर्वाधिक बिक्री वाला ऐसा रचनाकार जिसके उपन्यास, घोषणा होते ही दूकान में पहुँचने से पहले ही बिक जाते हों? ऐसा रचनाकार जिसने आभिजात्य और लोकप्रिय जैसे विरोधाभासों को एक साथ साध रखा हो? अपने अंग्रेजी में अनूदित आठ उपन्यासों के साथ जो भारत में सर्वाधिक अनूदित उपन्यासकारों में शामिल हों? जिनका लेखन साहित्य, सौंदर्यशास्त्र, दर्शन और संगीत का संगम हो? हाँ, आप संतेशिवरा लिंगण्णैया भैरप्पा हैं जिनके बारे में इतना ही नहीं, इससे अधिक और भी बहुत कुछ है।

एक कहावत है कि ''तथ्य अधिकतर कल्पना से अधिक अनजाने होते हैं''। भैरप्पा के बारे में यह कहावत अक्षरशः सही साबित होती है। उनका जीवन साहस, धैर्य और संघर्षशीलता की दास्तान है। उनके धैर्य और कठिनाई भरे जीवन का अंदाज़ा मात्र एक घटना से लगाया जा सकता है। जब वह सिर्फ़ पंद्रह बरस के थे, उन्हें अपने भाई का शव अपने कंधों पर ले जाना पड़ा और अंतिम संस्कार झाड़ियों और सूखे पत्तों से करना पड़ा था। कुछ और घटनाओं का ज़िक्र जो उन्होंने अपने शरीर और आत्मा की समरसता बनाने के लिए किया था, को याद करना हृदयविदारक है। उन्हें भगवान भरोसे चलने वाले छोटे-से क़स्बे में स्थित छोटे-से होटल में लोगों की मेज़ पर खाना परोसने का काम करना पड़ा था। उन्होंने घूम-घूमकर अगरबत्ती बेचने वाले सेल्समैन का काम भी किया। गाँव में लगने वाले साप्ताहिक मेलों में उन्हें शर्बत बेचना पड़ा। गाँव में पर्दे पर लगने वाले सिनेमा के लिए उन्होंने दरबान और गेट पर टिकट-संग्रह करने वाले का काम भी किया। इतना ही नहीं यह कठिनाइयों की पराकाष्ठा थी कि उन्हें बांबे सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर कुली के रूप में काम करना पड़ा। इस तरह विविधताओं और कठिनाइयों से

A LIVING LITERARY LEGEND

S.L.Bhyrappa on whom Sahitya Akademi is conferring its fellowship today is a prominent Kannada writer, author of more than twenty novels in a career extending over five decades.

How does one introduce a legend? As a colossus who has been striding the literary landscape for more than half a century with twenty three novels and a stunningly honest autobiography to his credit? As a best-selling author whose novels are sold out as soon as they are announced, even before they are on the shelves of bookshops? As a paradox of being elitist and popular simultaneously? As the most translated novelist in India today with eight of his novels translated into English? As a writer whose fiction is a remarkable combination of Literature, Aesthetics, Philosophy and Music? Yes, Santheshivara Ligannaiah Bhyrappa is all this and more – much more.

There is a saying, "Fact is stranger than fiction". This is literally true in the case of Bhyrappa whose life is an illustration of this adage. This is the story of a man of courage, fortitude and fighting spirit. The limit of his endurance and hardship may be recalled with just one incident. He had to carry the dead body of his brother on his shoulder and cremate it with shrubs and dry bushes when he was fifteen. A brief recollection of the odd jobs he had to do to keep body and soul together are heartrending. He had to wait on tables as a server in a small hotel in a godforsaken small town. He was a travelling salesman selling "Agarbathis". He had to sell "sharbat" at weekly village market days. He worked as a ticket-collector and gatekeeper at a village tent cinema. The ultimate limit was he worked as a porter in Bombay Central Railway

भरे उनके जीवन को तीन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है—घोर दरिद्रता, असीम कठिनाई और निस्पृह धैर्यशीलता। किशोरावस्था में मुंबई में किए गए उनके संघर्षों ने उन्हें ऐसी अंतर्दृष्टि और साहस दिया कि स्पष्टवादिता उनके व्यवहार का अंग बन गई। सोलह बरस की उम्र होते-होते भैरप्पा ने अपने दैनिक जीवन से इतने अनुभव ग्रहण कर लिए थे जितने कि अन्य लोग पूरे जीवन भर में नहीं कर पाते।

भैरप्पा का जन्म 20 अगस्त, 1931 को हास्सन ज़िला के चन्नारायपतन तालुके के संतेशिवरा नामक छोटे से गाँव के अत्यंत ग़रीब परिवार में हुआ था। इनका गाँव नारियल गाँव के नाम से जाना जाता है। इनकी यह जन्मभूमि, वहाँ का जीवन और संस्कृति इनके छोटे-छोटे शाब्दिक चित्रों में उपस्थित रही है, जो इनकी रचनाओं को मज़बूत बनाती रही है। भैरप्पा की उपलब्धि यह है कि इन्होंने स्थानीय भाषाओं के प्रामाणिक स्वाद को गँवाए बिना सार्वभौमिक बना दिया है। इनके पिताजी परिवार के पालन-पोषण में ग़ैर ज़िम्मेदार और उदासीन थे। इनकी माता गौरम्मा का साहस ही था कि उन्होंने अपने बूते आठ बच्चों वाले परिवार को पाला-पोसा जिसमें भैरप्पा तीसरे स्थान पर थे। दुर्भाग्य से इनकी माता को तीन बच्चे खोने पड़े। वे सभी प्लेग का शिकार हुए और अंततः इनकी माता भी। ईश्वरभीरू, पवित्र और उदार महिला के रूप में माता ने भैरप्पा को प्रेरित किया, जीवन का पाठ पढ़ाया और सुदृढ़ चरित्र का निर्माण किया। अपने अनंत कार्यों के बीच, माता गौरम्मा महाभारत की कथाएँ गाकर इन्हें सुनाया करती थीं और इसका प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी पड़ा। इनकी महानतम कृति *पर्व* में आलोचक इसका प्रभाव गहरे से देखते हैं, जो प्रसंगवश इनकी माता गौरम्मा को सप्रेम समर्पित है। यह याद करना और भी महत्त्वपूर्ण है कि इसे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित किया गया था, जिसका हाल में ही अकादेमी द्वारा दूसरी बार पुनर्मुद्रण किया गया। भैरप्पा का पहला उपन्यास *भीमकाय*, जब वह कॉलेज छात्र थे, तभी प्रकाशित हो गया था। जबकि उनका सबसे नया उपन्यास *यान* अभी पिछले बरस 2014 में प्रकाशित हुआ है। 1958 से आज तक उनके उपन्यास गंगा की तरह सतत् प्रवाहमान हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख किया जा सकता है, *वंशवृक्ष* (1965) में मनुष्य जीवन में आनुवांशिकता और जीन्स के महत्त्व का विषय उठाया गया है। इस उपन्यास की विशिष्टता यह है कि इसका अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद स्वयं लेखक द्वारा किया गया है। *तब्बालियु नीनादे मगने* (1968) प्रसिद्ध कन्नड लोककथा *गोविना हाडु* से संबंधित है। *नई नेरालु* (1968) पुनर्जन्म के सिद्धांतों का गहराई से अन्वेषण करता है। *गृहभंग* (1970) एक तरह का आत्मकथात्मक उपन्यास है जबकि *दातु* (1973) समाज में पसरी जाति-व्यवस्था को परत दर परत उघाड़ता चलता है। *पर्व* (1979) को हम अपने शास्त्रीय महाकाव्य *महाभारत* के प्रतिलेखन के रूप में देख सकते हैं। *साक्षी* एक गंभीर शब्दों वाला उपन्यास है जो तकनीकी वेदांतिक पद है और असत्य तथा सत्य का तत्त्वान्वेषण करता है। *तंतु* (1993) एक समकालीन महाकाव्यात्मक उपन्यास है जो राजनीति, समाज और बदलते मूल्यों के दर्पण के समान है। *सारथा* (1998) एक दृश्यावलियों से युक्त ऐतिहासिक उपन्यास है जो आठवीं शताब्दी के जीवन को शब्दों में पुनर्जीवित करता है। *मंद्र* (2002) एक संगीतमय उपन्यास है, *अवर्ण* (2007) उनका दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है, जो मुगल काल से संबंधित है। *यान* (2014) उनका नवीनतम उपन्यास है जो प्रत्यक्षतः विज्ञान कथालोक से संबंधित है मगर मनुष्य के आंतरिक आध्यात्मिक आकाश

Station. Such has been his early life – a life of penury, hardship and stoic endurance. His teenage struggles in Mumbai gave him the no-nonsense attitude which makes him call a spade a spade. By the time Bhyrappa was sixteen, he had more experience of daily lived life than most people have in their entire lives.

Bhyrappa was born in an extremely poor family on 20th August 1931 at Santheshivara, a hamlet in the Channarayapatna Taluk of Hassan District. This is known as the coconut county. This region, its life and culture has been presented in vignettes and strengthens his works. Bhyrappa's achievement is that he raises the regional to the universal level without losing any of the authentic flavor. His father was rather irresponsible and indifferent in maintaining his family. It was his mother Gowramma who bore the brunt of raising the family of eight children, Bhyrappa being the third. She was unfortunate in losing three of her children. Plague took its toll and she herself became a victim. A god-fearing, pious and noble lady, it was she who inspired, taught and moulded the character of Bhyrappa. In the midst of unending chores, she would recite the Mahabharata to him and this effect is seen in what many critics, have felt is his *magnum opus – Parva,* which, incidentally, is dedicated to her lovingly. It is important to remember that this is a Sahitya Akademi publication which saw its second reprint by the Akademi recently. Bhyrappa's first novel *Bhimakaya* was published when he was still a college student. His latest novel *Yaana* was published in 2014. From 1958 till date his novels are streaming forth like the River Ganga. Just to mention a few of them, *Vamshavriksha* (1965) deals with heredity and 'genes'. The speciality of this novel is that it has been translated by the author himself into English. *Tabbaliyu Ninade Magane* (1968) is related to the famous Kannada folk-tale *"Govina Haadu". Nayi Neralu* (1968) explores the concept of metempsychosis, *Grihabhanga* (1970), a kind of autobiographical novel, *Daatu* (1973) deals with the caste system. In *Parva* (1979) we see the transcreation of one of our epics, *Mahabharata, Saakshi* is a loaded word – a technical Vedantic term and is about the theme of Falsehood and Truth. *Tantu* (1993) is a contemporary epic-novel and holds a mirror upto life – political, social and changing values. *Sartha* (1998) *par excellence* is a picaresque, historical novel which recreates the eighth century. *Mandra* (2002) a "musical" novel, *Avarana* (2007) is his second historical novel and deals with the Moghul period. *Yaana* (2014) is his latest novel, taking off apparently from Science Fiction but exploring inner spiritual space. It is perhaps significant